RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.07 | No.03 | March 2022 | pp. 22-28
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Impact of Migration on Social Level of Working Women: A Geographical Study with Special Reference to Durg-Bhilai Cities

कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास का प्रभावः दुर्ग–भिलाई नगरों के विशेष संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन

*Dr. Shivendra Bahadur

Assistant Professor (Guest), S.O.S. In Geography, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur (C.G.)

Abstract

The main objective of the present study is to make a geographical analysis of the effect of migration on the social level of working women of Durg-Bhilai cities of Chhattisgarh state. This study is based entirely on primary data. For detailed study of working women of these cities, information related to working women engaged in various works has been obtained through interviews and schedules on the basis of objective-complete divine vision method. In this way, after obtaining information from 1202 working women from both the cities, the effect of migration has been analyzed on the basis of the subject of the study. The caste structure, migration pattern and educational status have been studied under the social conditions of working women. The selected working women have been given weight on the basis of their caste, educational level, quantity and price quality of consumption of non-food items and commodities, after that the combined weight index of the weight of all standard units has been found. Based on the combined weight index obtained, the working women have been categorized into three social strata: low, medium and high. The selected working women are divided into three geographical patterns on the basis of their place of birth. In the first category, those women who were born in different development blocks of the district have been kept in the working women migrants from within the district, while in the second category, the working women migrated from different districts of Chhattisgarh and in the third category from other states of India. Migrant working women have been included. Thus, the effect of migration pattern on the social level of selected working women has been analyzed using multivariate multivariate correlation coefficient under the multivariate model used by Jatrana (2001) and Cox (1972).

Keywords: *Durg-Bhilai city, working women, social status, place of birth, migration*

Abstract in Hindi

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग–भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास के प्रभाव का भौगोलिक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन पूर्णतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। इन नगरों की कार्यशील महिलाओं के विस्तृत अध्ययन हेतु उद्देश्य पूर्ण दैवनिदर्शन विधि के आधार पर विभिन्न कार्यों में संलग्न कार्यशील महिलाओं से संबंधित जानकारियाँ साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई है। इस प्रकार दोनों नगरों से कुल 1202 कार्यशील महिलाओं से जानकारी प्राप्त कर अध्ययन की विषय–वस्तु के आधार पर प्रवास के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। कार्यशील महिलाओं की सामाजिक दशा के अंर्तगत जाति संरचना, प्रवास प्रतिरूप एवं शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। चयनित क्रियाशील महिलाओं को उनकी जाति, शैक्षणिक स्तर, अखाद्य पदार्थ एवं वस्तुओं के उपभोग की मात्रा एवं मूल्य की गुणवत्ता के आधार पर भार दिया गया है, तत्पश्चात समस्त मानक इकाईयों के भार का संयुक्त भार सूचकांक ज्ञात किया गया है। प्राप्त संयुक्त भार सूचकांक के आधार पर कार्यशील महिलाओं को तीन सामाजिक स्तर निम्न, मध्यम एवं उच्च में वर्गीकृत कर विश्लेषण किया गया है। चयनित कार्यशील महिलाओं को उनके जन्मस्थान के आधार पर तीन भौगोलिक प्रतिरूपों में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ग में वे महिलाएँ जिनका जन्म जिले के विभिन्न विकासखण्डों में हुआ है, उन्हें जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं में रखा गया है, जबकि द्वितीय वर्ग में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित

Article Publication

Published Online: 23-Mar-2022

***Author's Correspondence**

Dr. Shivendra Bahadur

Assistant Professor (Guest), S.O.S. In Geography, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur (C.G.)

shivendrakorar@gmail.com

10.31305/rrijm.2022.v07.i03.004

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

कार्यशील महिलाओं को एवं तृतीय वर्ग में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार चयनित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास प्रतिरूप के प्रभाव को जतराना (2001) एवं काक्स (1972) द्वारा प्रयुक्त बहुचर मॉडल के अन्तर्गत बहुचर गुणनपूर्ण सहसम्बध गुणांक का प्रयोग करके विश्लेषित किया गया है।

Keywords: *दुर्ग–भिलाई नगर, कार्यशील महिला, सामाजिक स्तर, जन्मस्थान, प्रवास*

प्रस्तावना–

किसी भी समुदाय की जनसंख्या की सामाजिक संरचना जनसंख्या के गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास का सूचक होती है, जिससे क्षेत्र की जनसंख्या की वास्तविक स्थिति प्रदर्शित होती है। जनसंख्या की सामाजिक दशा मुख्यतः शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रवास एवं व्यावसायिक संरचना से प्रभावित होती है, तथापि क्षेत्र का सर्वांगीण विकास तभी संभव होता है, जब उसमें महिलाओं की सहभागिता अधिक से अधिक हो। कोई भी देश अथवा समाज अथवा व्यक्ति तब तक प्रगति की राह में अग्रसर नहीं हो सकता, जब तक वहाँ की महिलाओं की सामाजिक दशा ठीक नहीं होगी (चांदना, 2012)। कार्यशील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप एवं उनके सामाजिक स्तर में सहसम्बन्ध होता है। इस दृष्टि से नगरीय क्षेत्रों में कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर को उनका प्रवास प्रतिरूप विशेष रूप से प्रभावित करता है।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य, छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग–भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास प्रतिरूप के प्रभाव का सांख्यिकी विधि द्वारा विश्लेषण करना है।

अध्ययन क्षेत्र–

दुर्ग नगर छत्तीसगढ़ का प्रमुख व्यापारिक एवं वाणिज्यिक नगर तथा भिलाई नगर एक औद्योगिक नगर है। दुर्ग नगर के विकास में भिलाई औद्योगिक नगर की निकटता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसीलिए इन्हें छत्तीसगढ़ का एक मात्र जुड़वा नगर कहा जाता है। दुर्ग नगर जिले का प्रशासनिक केन्द्र एवं जिला मुख्यालय है। वर्ष 1956 में लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के पूर्व तक भिलाई एक छोटा ग्राम था परन्तु लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के बाद भिलाई नगर का विकास औद्योगिक नगर के रूप में हुआ। दोनों नगर से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग 58 गुजरती है। दुर्ग नगर, राज्य की राजधानी रायपुर से 45 किलोमीटर तथा भिलाई नगर 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। दुर्ग एवं भिलाई नगर के मध्य की दूरी 12 कि.मी. है। दुर्ग नगर का कुल क्षेत्रफल 54.11 वर्ग कि.मी. है, वहीं भिलाई नगर का कुल क्षेत्रफल 142.32 वर्ग कि.मी. है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार दुर्ग नगर की कुल जनसंख्या 2,68,806 व्यक्ति है, वहीं भिलाई नगर की कुल जनसंख्या 6,27,734 व्यक्ति है। दुर्ग नगर की तुलना में (17.76%) भिलाई नगर में कुल महिला जनसंख्या में कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत (12. 07%) कम है।

आँकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र–

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें नगरीय कार्यशील महिलाओं की सामाजिक दशा संबंधी आँकड़ें प्रमुख हैं, तथापि नगर से संबधित भौगोलिक एवं सांस्कृतिक जानकारी द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है।

प्राथमिक आँकड़ें–

दुर्ग–भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास के प्रभाव से संबंधित जानकारियाँ साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई है। इन नगरों से कार्यशील महिलाओं का चयन उनके कार्यिक प्रतिरूप को दृष्टिगत रखते हुए उद्देश्यपूर्ण दैवनिदर्शन विधि द्वारा किया गया है। कार्यशील महिलाओं से संबंधित जानकारी उसके कार्यस्थल यथा– शासकीय एवं अशासकीय कार्यालय, शिक्षण संस्थानों, अस्पताल, दुकानों, निर्माण स्थलों एवं मलिन बस्तियों में जा कर प्राप्त की गई है। इस प्रकार दोनों नगरों की कुल कार्यशील महिलाओं में से 1202 (दुर्ग नगर से 588 एवं भिलाई नगर 614 से कार्यशील) कार्यशील महिलाओं का चयन कर जानकारी प्राप्त की गई है। चयनित कार्यशील महिलाओं के प्रतिदर्श आकार का सांख्यिकी विधि द्वारा प्रतिदर्श माध्य एवं वास्तविक माध्य के मध्य प्रसरण का सार्थकता परीक्षण किया गया है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर प्रमाणित हुआ।

द्वितीयक आँकड़ें–

दुर्ग–भिलाई नगरों के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों के विश्लेषण के लिए द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। नगरों की जनसंख्या संबंधी आँकड़ें जनगणना पुस्तिका जिला दुर्ग (2011) एवं नगर के मानचित्र संचालनालय, नगर तथा ग्राम निवेश रायपुर (छ.ग.) से प्राप्त किए गए हैं।

विधितंत्र–

साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त आँकड़ों के प्रक्रियान्वयन के लिए सर्वप्रथम अनुसूची में संपादन तथा संकेतीकरण किया गया तथा प्राप्त सूचनाओं को कम्प्यूटर में प्रविष्ट कर वर्गीकरण एवं सारणीयन का कार्य सम्पन्न किया गया। चयनित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर को स्थानिक आधार पर विश्लेषित किया गया है। इसके अलावा चयनित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास के प्रभाव को उनके जन्मस्थान के आधार पर तीन भौगोलिक प्रतिरूपों में विभाजित कर विश्लेषित किया गया है। प्रथम वर्ग में वे कार्यशील महिलाएँ जिनका जन्म जिले के विभिन्न विकासखण्डों में हुआ है, उन्हें जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं में रखा गया है, जबकि द्वितीय वर्ग में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को एवं तृतीय वर्ग में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार चयनित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास के प्रभाव को जतराना (2001) एवं काक्स (1972) द्वारा प्रयुक्त बहुचर मॉडल के अन्तर्गत बहुचर गुणनपूर्ण सहसम्बध गुणांक का प्रयोग करके विश्लेषित किया गया है।

दुर्ग–भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं की सामाजिक दशा–

महिलाओं की आर्थिक क्रियाशीलता परिवार के गुणात्मक एवं मात्रात्मक स्वरूप को विशेष रूप से प्रभावित करती है, जिससे न केवल महिलाओं की अपितु, परिवार की भी सामाजिक दशा प्रभावित होती है। अतः महिलाएँ ग्रामीण हों या शहरी हों, उनको आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में सामाजिक स्थिति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है (अहमद इरफान, 2014)। इस प्रकार कार्यशील महिलाओं की सामाजिक दशा के अंर्तगत जाति संरचना, प्रवास प्रतिरूप एवं शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

कार्यशील महिलाओं की जाति संरचना–

जनसंख्या के सामाजिक दशाओं के विश्लेषण एवं भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जाति संरचना का विशेष महत्व है। मुखर्जी (1961) के अनुसार– भारतीय समाज में स्त्रियों की जाति संरचना, उनकी व्यावसायिक दशा, आचार–विचार, रहन–सहन, स्वास्थ्य तथा शिक्षा को प्रभावित करती है। दुर्ग–भिलाई नगर के कुल चयनित कार्यशील महिलाओं में अन्य जाति वर्ग की महिलाओं की सहभागिता (67.64%) सर्वाधिक प्राप्त हुई, जबकि अनुसूचित जातियों में महिलाओं की क्रियाशीलता (4.41%) न्यूनतम प्रदर्शित हुई। इस प्रकार कार्यशील महिलाओं के कार्यिक दशा में जाति भेद में सोलह गुना का अन्तर दृष्टव्य हुआ। स्थानिक दृष्टि से भिलाई नगर की तुलना में (10 गुना) दुर्ग नगर में (24 गुना) कार्यशील महिलाओं में जाति कार्यिक विभेद अधिक प्राप्त हुआ। चयनित कार्यशील महिलाओं में अनुसूचित जाति (6.35%), अनुसूचित जनजाति (9.77%) एवं अन्य पिछड़ा वर्ग (22.15%) की कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत जहाँ भिलाई नगर में अधिक दृष्टव्य हुआ, वहीं अन्य जाति वर्ग (73.81%) की कार्यशील महिलाओं का अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर में दृष्टव्य हुआ।

दुर्ग नगर की तुलना में भिलाई नगर की सामाजिक व्यवस्था में आधुनिकीकरण का संविलयन अपेक्षाकृत अधिक हुआ है, जिसका प्रभाव अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की आर्थिक सहभागिता पर स्पष्ट दिखाई देता है, तथापि शासकीय एवं अशासकीय सेवाओं में विशेष आरक्षण के कारण विभिन्न जातियों की महिलाओं की न केवल क्रियाशीलता दर प्रभावित हुई, अपितु कार्यिक संरचना को विकेन्द्रित करने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। इस प्रकार दोनों जुड़वा नगरों के कार्यशील महिलाओं की जाति संरचना का स्पष्ट प्रभाव जातिगत क्रियाशीलता दर पर दिखाई देता है।

कार्यशील महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति–

नगरीय क्षेत्रों में कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर को उन्नत करने में शिक्षा विशेष महत्व रखती है तथा स्त्रियों की साक्षरता दर एवं उनके सामाजिक स्तर में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। शर्मा एवं मीणा (2014) के अनुसार– एक शिक्षित महिला ही आर्थिक रूप से अधिक मजबूत एवं सामाजिक रूप से अधिक विकसित होती है।

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में चयनित कार्यशील महिलाओं की कार्यिक संरचना के निर्धारण में उनकी शैक्षणिक स्थिति का प्रभाव महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से कुल चयनित कार्यशील महिलाओं में मात्र 7.49 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ निरक्षर है।

निरक्षर कार्यशील महिलाएँ भिलाई नगर (8.30%) में जहाँ अपेक्षाकृत अधिक रहीं, वही साक्षर कार्यशील महिलाओं का अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर (93.36%) में प्राप्त हुआ। दोनों जुड़वा नगरों में कुल कार्यशील महिलाओं का साक्षरता दर 92.51 प्रतिशत है, जो नगरों में महिलाओं की उच्च साक्षर स्थिति को प्रदर्शित करता है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में 7.28 प्रतिशत महिलाएँ मात्र साक्षर हैं। मात्र साक्षर महिलाओं का अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर (8.19%) में प्राप्त हुआ, जबकि प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की साक्षर महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत दोनों जुड़वा नगरों में समतुल्य रहा। दोनों नगरों में उच्चतर–माध्यमिक से अधिक साक्षर स्तर की कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत 67.18 है। तुलनात्मक दृष्टि में दुर्ग नगर (64.65%) की तुलना में भिलाई नगर (69.61%) में महिलाओं का शैक्षणिक स्तर अपेक्षाकृत उच्च रहा, जबकि व्यावसायिक साक्षरता में दोनों जुड़वा नगरों में कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत 15.38 प्राप्त हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से दुर्ग नगर (16.57%) में व्यावसायिक स्तर की कार्यशील महिलाएँ अधिक प्रदर्शित हुईं है। इस प्रकार दुर्ग–भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं के कार्यिक विभेद एवं शैक्षणिक स्तर में उच्च धनात्मक सार्थक सम्बंध पाया गया, जिससे महिलाओं के सामाजिक दशा प्रभावित हुई।

कार्यशील महिलाओं का प्रवास प्रतिरूप–

नगरोन्मुख प्रवास की मात्रा एवं दिशा निर्धारित करने में औद्योगिक एवं प्रौद्योगिक प्रगति, जिसमें रोजगार की उपलब्धता अधिक होती है, आकर्षण के विशेष केन्द्र बिन्दु होते हैं। बोग (1969) ने मात्र उस निवास परिवर्तन को प्रवास कहा, जिसमें व्यक्ति विशेष के सामुदायिक लगाव में पूर्णतः परिवर्तन और पुर्नसमायोजन होता है, वहीं जैलिन्स्की (1971) ने प्रवास को, मृत्युदर व जन्म दर की तरह पूर्णतः जैविक घटना नहीं, बल्कि भौतिक और सामाजिक लेनदेन की प्रक्रिया बताया है। इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ के दुर्ग–भिलाई नगर प्रवासियों के प्रमुख आकर्षण केन्द्र हैं। चयनित कार्यशील महिलाओं को उनके जन्मस्थान के आधार पर तीन भौगोलिक प्रतिरूपों में विभाजित कर विश्लेषित किया गया है। प्रथम वर्ग में वे महिलाएँ जिनका जन्म जिले के विभिन्न विकासखण्डों में हुआ है, उन्हें जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं में रखा गया है, जबकि द्वितीय वर्ग में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को एवं तृतीय वर्ग में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप के आधार पर चयनित कार्यशील महिलाओं के भौगोलिक स्थानिक प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है।

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में ग्रामों से नगरों में प्रवास अधिक हुए हैं। भिलाई नगर के विकास के साथ–साथ नगरों में महिला प्रवास में वृद्धि हुई। इस प्रकार कार्यशील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप पर उनके भौगोलिक स्थानिक प्रतिरूप का विशेष प्रभाव दृष्टव्य होता है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कुल चयनित कार्यशील महिलाओं में से 58.07 प्रतिशत महिलाएँ दुर्ग जिले के अन्दर से प्रवासित हुई, जबकि 6.16 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित हुई। इसके विपरीत 35.77 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित हुई। दुर्ग जिले से प्रवासित कार्यशील महिलाओं का जहाँ अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर (61.73%) में प्राप्त हुआ, वहीं भिलाई नगर में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से (8.96%) एवं भारत के अन्य राज्यों से (36.48%) कार्यशील महिलाएँ अधिक प्रवासित हुई। इस प्रकार दोनों नगरों की कार्यशील महिलाओं में प्रवास विभेद नौ गुना प्राप्त हुआ, तथापि भारत के अन्य राज्यों से हुए आप्रवास में महिलाओं के प्रतिशत में जहाँ विभेद कम रहा, वहीं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं के प्रतिशत में अन्तर अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ।

कार्यशील महिलाओं का सामाजिक स्तर–

महिलाओं की श्रमशक्ति परिवार के जनसांख्यिकीय, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों से उत्प्रेरित होती है। महिलाओं की आर्थिक सहभागिता से उनका सामाजिक स्तर उच्च होता है। महिलाओं को अपने व्यक्तित्व का निर्माण तथा मानव समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने, अच्छी पत्नी तथा अच्छी माता बनने एवं नागरिक समुदाय में अलग पहचान के लिए सामाजिक स्तर का उच्च होना आवश्यक है (दास एवं शर्मा, 2011)।

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों के चयनित कार्यशील महिलाओं का सामाजिक स्तर ज्ञात करने के लिए जाति, शैक्षणिक स्तर एवं अखाद्य पदार्थों के उपभोग को मानक इकाई माना गया है। चयनित क्रियाशील महिलाओं को उनकी जाति, शैक्षणिक स्तर एवं अखाद्य पदार्थ एवं वस्तुओं के उपभोग की मात्रा एवं मूल्य की गुणवत्ता के आधार पर भार दिया गया। तत्पश्चात समस्त मानक इकाईयों के भार का संयुक्त भार सूचकांक ज्ञात किया गया। इस प्रकार दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों के चयनित कार्यशील महिलाओं का अधिकतम संयुक्त भार सूचकांक 42 प्राप्त हुआ। प्राप्त संयुक्त भार सूचकांक के आधार पर कार्यशील महिलाओं को तीन सामाजिक स्तर निम्न, मध्यम एवं उच्च में रखा गया। निम्न सामाजिक स्तर के अंतर्गत उन कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जिनका संयुक्त भार सूचकांक 14 से कम है, जबकि मध्यम सामाजिक स्तर में उन

कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जिनका संयुक्त भार सूचकांक 15 से 28 तथा उच्च सामाजिक स्तर में उन कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जिनका संयुक्त भार सूचकांक 29 से 42 है। इस प्रकार दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों के चयनित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर के संयुक्त भार सूचकांक के आधार पर सामाजिक स्तर को स्थानिक एवं प्रवास प्रतिरूप के अनुसार विश्लेषित किया गया है।

कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर का स्थानिक विश्लेषण–

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कुल 35.44 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ निम्न सामाजिक स्तर से हैं, जबकि 42.51 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ मध्यम सामाजिक स्तर से एवं 22.05 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ उच्च सामाजिक स्तर से हैं। इस प्रकार मध्यम सामाजिक स्तर की कार्यशील महिलाएँ अपेक्षाकृत अधिक रहीं। तुलनात्मक दृष्टि से दुर्ग नगर (38.27%) में जहाँ निम्न सामाजिक स्तर की कार्यशील महिलाएँ अधिक हैं, वहीं भिलाई नगर में मध्यम (43.00%) एवं उच्च (24.27%) सामाजिक स्तर की कार्यशील महिलाएँ अपेक्षाकृत अधिक रहीं **(मानचित्र–01)**। मध्यम सामाजिक स्तर में जहाँ दोनों नगरों में कार्यशील महिलाओं के प्रतिशत में विभेद कम रहा, वहीं उच्च एवं निम्न सामाजिक स्तर में कार्यशील महिलाओं की सहभागिता में अपेक्षाकृत अधिक अन्तर दृष्टव्य हुआ, जो दोनों नगरों की कार्यशील महिलाओं के कार्यात्मक संरचना में भिन्नता का प्रतिफल है।

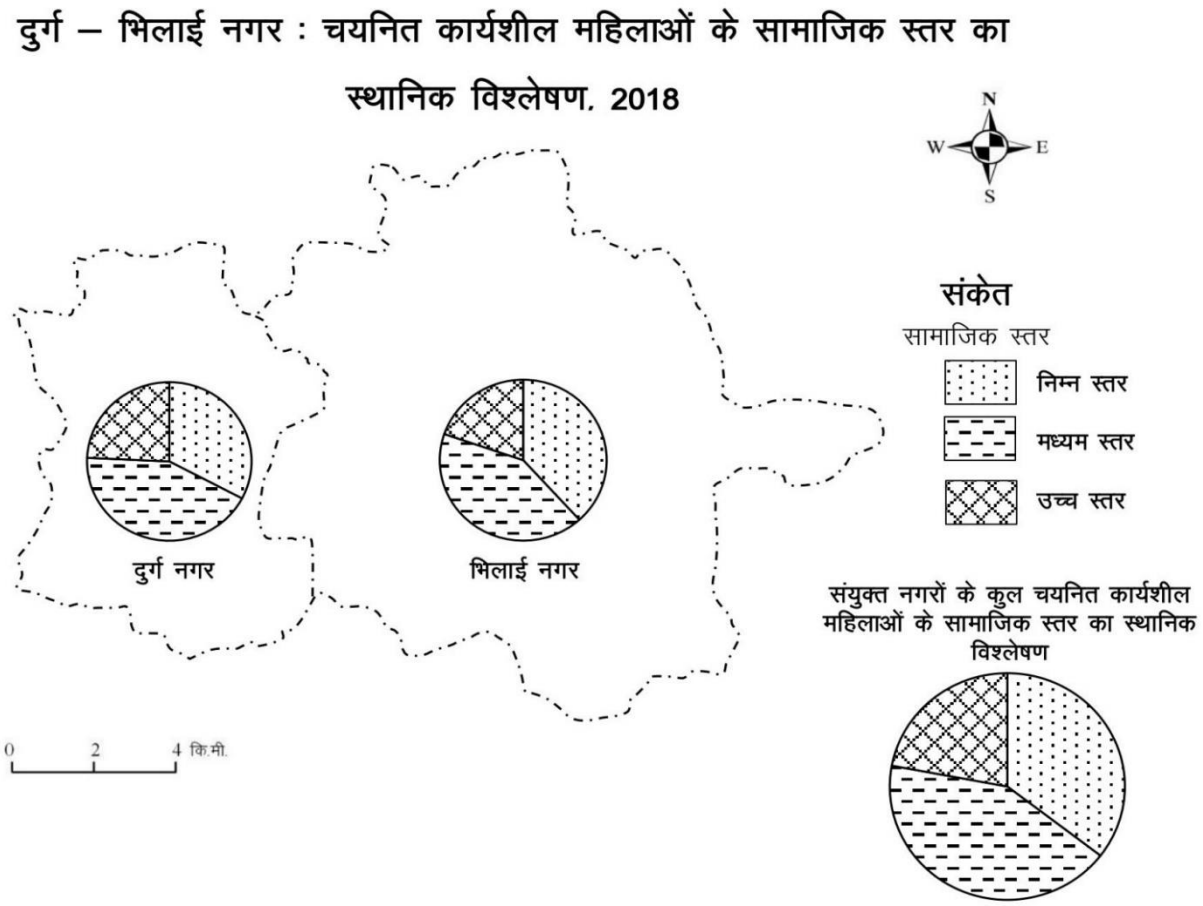

मानचित्र–01

कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास का प्रभाव–

कार्यशील महिलाओं की भौगोलिक गतिशीलता उनके कार्यिक संरचना के साथ–साथ सामाजिक स्तर के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण होती है। महानगरीय क्षेत्र में महिलाएँ अपने पति के साथ केवल उसके अनुकरण के लिए ही परिवार सहित प्रवासित नहीं होती हैं, बल्कि उनके प्रवास का मुख्य कारण निर्धनता होती है, जिसमें इन आप्रवासी महिलाओं को नगर में कुछ समय के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं (कुण्डू, 1987)।

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों के कुल चयनित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर के निर्धारण में उनके प्रवास प्रतिरूप का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं में निम्न सामाजिक स्तर (36.10%) का प्रतिशत

भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (33.72%) से 2.38 प्रतिशत अधिक रहा। इसके विपरीत उच्च सामाजिक स्तर में भारत के अन्य राज्यों के प्रवासित कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत (35.35%) जिले से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (14.04%) से 2.5 गुना अधिक रहा **(मानचित्र–02)**। इससे स्पष्ट होता है कि भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं का सामाजिक स्तर जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं से अपेक्षाकृत अधिक है।

दुर्ग–भिलाई नगरः चयनित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास का प्रभाव, 2018

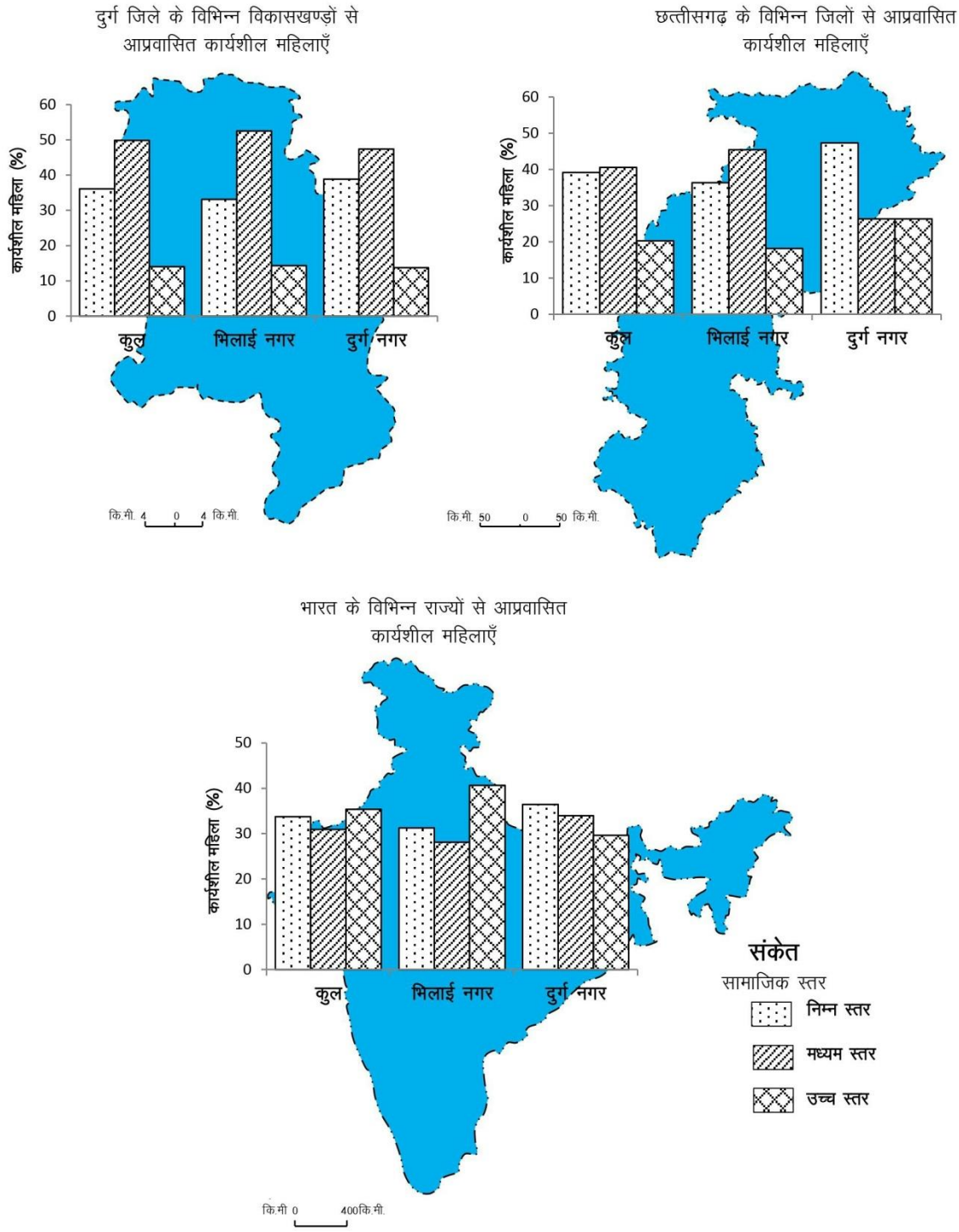

मानचित्र–02

दुर्ग नगर में प्रवासित कार्यशील महिलाओं में जहाँ निम्न सामाजिक स्तर का प्रतिशत सभी प्रवास प्रतिरूपों में उच्च रहा, वहीं उच्च सामाजिक स्तर का प्रतिशत निम्न प्रदर्शित हुआ। इसके विपरीत भिलाई नगर में जहाँ सभी प्रवास प्रतिरूपों में निम्न सामाजिक स्तर का प्रतिशत निम्न रहा, वहीं उच्च सामाजिक स्तर का प्रतिशत उच्च प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि दुर्ग नगर क्षेत्र का प्रशासनिक प्रतिनिधि नगर होने के कारण यहाँ केवल प्रशासनिक एवं व्यापारिक विकास ही संभव हुआ है। स्थानिक दृष्टि से दुर्ग नगर में जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (38.84%), छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (47.37%) एवं भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (36.41%) का निम्न सामाजिक स्तर में जहाँ प्रतिशत उच्च रहा, वहीं उच्च सामाजिक स्तर का प्रतिशत जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (13.77%) एवं भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (29.61%) में न्यूनतम रहा। इसके विपरीत भिलाई नगर में जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (14.33%) एवं भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं (40.63%) का उच्च सामाजिक स्तर में प्रतिशत सर्वाधिक रहा। उल्लेखनीय है कि दुर्ग नगर, भिलाई नगर का जुड़वा नगर है, अतः भिलाई नगर के विकास का प्रभाव दुर्ग नगर की कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर दृष्टव्य हुआ।

निष्कर्ष–

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर को निर्धारित करने में प्रवास प्रतिरूप प्रमुख घटक रहा है। इसीलिए कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर पर प्रवास के प्रभाव का बहुचर कारक विश्लेषण किया गया। बहुचर कारक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कार्यशील महिलाओं के सामाजिक स्तर के निर्धारण में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं की भूमिका निम्न सामाजिक स्तर में जहाँ कम रही, वहीं उच्च सामाजिक स्तर में अधिक रही तथा उच्च सार्थक स्तर में प्रमाणित हुई। इसके विपरीत कार्यशील महिलाओं के उच्च सामाजिक स्तर को समृद्ध करने में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित अन्य जाति की कार्यशील महिलाओं का प्रभाव निम्न सार्थक स्तर पर प्रमाणित हुआ, वहीं कार्यशील महिलाओं के निम्न सामाजिक स्तर को बढ़ाने में जिले के अंदर से प्रवासित अन्य पिछड़ा वर्ग की कार्यशील महिलाओं की क्रियाशीलता उच्च सार्थक स्तर पर प्रभावशील रही। कार्यशील महिलाओं की उच्च सामाजिक स्तर को समृद्ध एवं उन्नत करने में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित साक्षर महिलाओं की क्रियाशीलता का प्रभाव उच्च सार्थक स्तर पर दृष्टव्य हुआ, वहीं निम्न सामाजिक स्तर को कम करने में भी उच्च सार्थक स्तर पर प्रभावशील रहा। प्रवासित कार्यशील महिलाओं का माध्यमिक स्तर से कम शैक्षणिक स्तर निम्न सामाजिक स्तर को बढ़ाने में उच्च सार्थक स्तर पर प्रमाणित हुआ, वहीं स्नातक/स्नातकोत्तर एवं व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव निम्न सामाजिक स्तर को कम करने में उच्च सार्थक स्तर पर प्रभावशील रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

Bouge, D. J. (1969). Principles of Demography, New York, Johnwiley, p. 213.

Cox, D. R. (1972). 'Regression Models and Life Tables', Journal of the Royal Statistical Society, Vol. 34 (Series B), pp. 187-220.

Das, M. and H. N. Sharma (2011). "Literacy Patterns Among Tribal Women in Assam", Geographical Review of India, Vol. 73, No 2, pp. 125-133.

Jatarana, S. (2001). 'Household Enviromental Factors and their Effects on Infant Mortality in Mewat Region of Haryana State India', Demography of India, Vol. 30, No. 1, pp. 31-47.

Kundu, A. (1987). The Quatily Povery and Urban Growth the case of Metropolitan Cities in India, in S.Mausooc Alam and Fatima Ali Khan (ed.) Poverty in Metropolitan cities concept Publishing Company, New Delhi, p.41.

Mukherjee, R.K. (1961). Social Relations and Social Problems in India, Asia Publication House, Bombay, p. 161.

Zelinsky, Wilbus (1971)."The Hypothesis of the Mobility", Geographical Review,Vol. 61, pp. 219-249.

अहमद, इरफान (2014).''महिला सशक्तिकरण'', इंस्टिट्यूट फॉर सोशल डेव्हलपमेंट एंड रिसर्च, रांची, पृ. 49.

चांदना, आर. सी. (2012). *जनसंख्या भूगोल,* कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 339.

शर्मा, जयप्रकाश एवं प्रमोद कुमार मीना (2014).''राजस्थान में महिला सशक्तिकरणः शिक्षा की दृष्टि से भौगोलिक अध्ययन'', इंस्टिट्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एण्ड रिर्सच, रांची, पृ. 40.